Project Mid-term Review

CINI, Jharkhand

April 2011

सिनी झारखण्ड द्धारा "Integrated Education for Deprived and Vulnerable Children (DVC) in Jharkhand" पर कार्य किया जा रहा है। इस प्रोजेक्ट के लिए सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट द्धारा वित्तीय सहयोग प्रदान किया जा रहा है। ट्रस्ट द्धारा संधान को इस प्रोजेक्ट मिड-टर्म रिव्यू की जिम्मेदारी दी गयी। संधान द्धारा दो साथियों - अरविन्द शर्मा एवं महेश शर्मा द्धारा 4 से 8 अप्रैल 2011 तक फील्ड विज़िट किया गया। इस रिव्यू की विस्तृत रिपोर्ट यहाँ प्रस्तुत है।

भूमिका

सिनी संस्था ने फरवरी 2008 में तीन जिलों - हजारीबाग, गुमला व चाईबासा (चक्रधरपुर) के शहरी क्षेत्रों में सर्वे किया। इस सर्वे में 3 से 14 आयु वर्ग के 3217 बच्चे विद्यालय से बाहर थे। ये बच्चे आंगनबाड़ी सेन्टर या विद्यालय में होने चाहिए थे। संस्था ने इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए एक प्रोजेक्ट प्रपोजल विकसित किया जिसमें 1800 बच्चों को विद्यालयी शिक्षा की मुख्य धारा में जोड़ने एवं आंगनबाड़ी सेन्टरों के बेहतर संचालन की कार्य प्रक्रिया विकसित की गयी।

संस्था सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से वर्ष 2010 से इस प्रोजेक्ट पर कार्य कर रही है। प्रोजेक्ट के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

- 6 से 14 आयु वर्ग के 1800 बच्चों को विद्यालय की मुख्य धारा में सम्मिलित करना।
- प्रोजेक्ट के दूसरे वर्ष में इन बच्चों को उपचारात्मक शिक्षण देना जिससे इनका विद्यालय में ठहराव सुनिश्चित हो।
- 3 से 5 वर्ष के 800 बच्चों को विद्यालय पूर्व शिक्षण से जोड़ना।
- विद्यालय पूर्व शिक्षण के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण।
- स्थानीय स्वयंसेवी संस्थाओं का सुदृढ़ीकरण।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उपरोक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए संस्था ने वर्ष 2010-11 में गतिविधियाँ संचालित की। दो वर्ष के इस प्रोजेक्ट का लगभग एक वर्ष पूरा हो गया है। प्रोजेक्ट के लिए यह सही समय है कि संस्था द्वारा किये गये कार्य का विश्लेषण किया जाये। जिससे आगे काम करने की दिशा स्पष्ट हो। इसी को ध्यान में रखते हुए यह मिड टर्म समीक्षा की गयी। इस समीक्षा के मुख्यत: निम्न उद्देश्य हैं -

- प्रोजेक्ट की गतिविधियों, उपलब्धियों एवं प्रक्रियाओं का जायज़ा लेना।
- पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण एवं सन्दर्भ सामग्री की समीक्षा।
- बच्चों, शिक्षकों एवं समुदाय द्वारा प्रोजेक्ट की प्रक्रियाओं व उपलब्धियों को जानना।
- सरकारी विद्यालयों के साथ प्रोजेक्ट के समन्वयन को समझना।
- प्रोजेक्ट के प्रबन्धन व रिपोर्टिंग सिस्टम को समझना।

उपरोक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन की विधा का निर्धारण किया गया। संधान से दो सदस्यों की टीम ने दिनांक 4 से 8 अप्रैल 2011 तक संस्था की गतिविधियों का अवलोकन किया एवं प्रोजेक्ट में सम्बन्धित व्यक्तियों से विचार-विमर्श किया। इसकी विस्तृत रिपोर्ट निम्नानुसार है -

विधा

इस मूल्यांकन कार्य के लिए व्यवस्थित विधा अपनाई गई। इस विधा में मुख्यत: निम्न तरीकों को शामिल किया गया -

1. डेस्क रिव्यू
2. अवलोकन
3. समूह चर्चा
4. साक्षात्कार
5. उपलब्धि टेस्ट

1. **डेस्क रिव्यू**

   इसके तहत सिनी संस्था के द्वारा टाटा ट्रस्ट को दिये गये प्रोजेक्ट प्रपोजल का अध्ययन किया गया और प्रोजेक्ट के एक वर्ष के दौरान संस्था द्वारा की गयी गतिविधियों की रिपोर्ट का अध्ययन किया गया। इनमें प्रशिक्षण रिपोर्ट,

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मूल्यांकन रिपोर्ट, त्रैमासिक रिपोर्ट शामिल है। इन रिपोर्ट्स के माध्यम से संस्था द्धारा किये गये कार्यों की प्रक्रिया व प्रोजेक्ट की उपलब्धि पर स्पष्टता हुई। डेस्क रिव्यू में सेन्टर पर बच्चों के साथ कार्य के लिए बनाए गए पाठ्यक्रम का भी अध्ययन किया गया।

2. **अवलोकन**

संस्था द्धारा चलाये जा रहे 70 सेन्टर्स में से 11 सेन्टर्स (15%) का अवलोकन किया गया। इस अवलोकन के दौरान एजूकेटर्स द्धारा किये जाने वाले शिक्षण कार्य की प्रक्रिया, उपलब्ध शैक्षणिक सामग्री व सेन्टर के माहौल को समझने के साथ-साथ समुदाय के साथ रिश्तों को भी समझने का प्रयास रहा।

3. **समूह चर्चा**

मूल्यांकन के दौरान सरकारी स्कूल के 7 शिक्षकों, संस्था के 7 एजुकेटर्स एवं समुदाय के लोगों के दो समूह के साथ समूह चर्चा की गयी। इस समूह चर्चा के दौरान संस्था के कार्य की व्यक्तिगत व सामूहिक समझ को समझने का प्रयास रहा।

4. **साक्षात्कार**

इस मूल्यांकन के दौरान संस्था के एजुकेटर्स, सुपरवाइजर एवं बच्चों के साथ साक्षात्कार किया गया। ये साक्षात्कार खुले प्रश्नों के साथ अनौपचारिक बातचीत की तरह किये गये। इस साक्षात्कार को अवलोकन के दौरान उभरने वाले मुद्दों के इर्द-गिर्द ही बुना गया।

5. **उपलब्धि टेस्ट**

मूल्यांकन के दौरान सेन्टर्स पर उपस्थित बच्चों का उपलब्धि टेस्ट उनके स्तरानुसार लिया गया। यह टेस्ट मौखिक रूप से बोलकर या बोर्ड पर लिख कर अनौपचारिक तरीके से लिया गया। टेस्ट से पूर्व एजुकेटर से बच्चों के शैक्षणिक स्तर की जानकारी ली जाती थी। उसी स्तर को आधार बनाकर टेस्ट लिये गये। इसके अतिरिक्त शिक्षकों की विषयवस्तु पर समझ को जानने के लिए टेस्ट लिया गया। टेस्ट द्धारा उनके गणित की विषय-वस्तु की स्पष्टता को समझने का प्रयास रहा।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सेन्टर का चयन

संस्था द्वारा मुख्य तौर पर दो तरह से सेन्टर्स संचालित हो रहे हैं – एक तो वे सेन्टर्स जो समुदाय में चलते हैं, दूसरे वे सेन्टर्स हैं जो विद्यालय परिसर में चलाये जा रहे हैं। अवलोकन के लिए दोनों की तरह के सेन्टर्स का चयन किया। संस्था द्वारा संचालित कुल 70 सेन्टर्स में से 15% (11) सेन्टर्स का अवलोकन किया गया। अवलोकन किये गये 11 सेन्टर्स में से 4 सेन्टर्स विद्यालय परिसर में संचालित किये जा रहे हैं। अवलोकन किये गये सेन्टर्स का विवरण निम्नानुसार हैं –

क्र. सं.	जिला	नाम	स्थान
1.	गुमला	टंगरा टोली	विद्यालय
2.	गुमला	कुंवरिया	समुदाय
3.	गुमला	गौस नगर	समुदाय
4.	गुमला	आज़ाद बस्ती, हुसैन नगर	विद्यालय
5.	चक्रधरपुर	एस.सी. बस्ती	समुदाय
6.	चक्रधरपुर	बड़ा मंदिर, रेल्वे कॉलोनी	समुदाय
7.	चक्रधरपुर	म्यूनिसिपैलिटी एरिया	समुदाय
8.	हजारीबाग	हरिजन टोला	समुदाय
9.	हजारीबाग	नूरा मोहल्ला	विद्यालय
10.	हजारीबाग	कानी बाजार	विद्यालय
11.	हजारीबाग	हेठ टोला, हरिजन बस्ती, खोटी	समुदाय

स्थिति अवलोकन

प्रोजेक्ट के कार्यों को समझने के लिए किये गये अवलोकन, समूह चर्चा, साक्षात्कार एवं डॉक्यूमेन्ट्स के अध्ययन से प्राप्त जानकारी का विश्लेषण किया गया। इस विश्लेषण में क्या करने से क्या हुआ और आगे क्या सम्भावनाएँ हैं, इसको आधार बनाया गया। स्थिति विश्लेषण का व्यवस्थित विवरण निम्नानुसार है –

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सेन्टर का स्थान

सेन्टर्स को चलाने के लिए जिन स्थानों का चयन किया गया है वो सभी स्थान बच्चों के मौहल्ले और उनकी पहुँच में हैं। यदि बालिकाओं की सुरक्षा को लेकर देखा जाये तो भी सभी केन्द्र सुरक्षित स्थान (मौहल्लों) पर चलाये जा रहे हैं। चार केन्द्र सरकारी विद्यालयों में चलाये जा रहे हैं। सभी स्कूलों में एक इतना बड़ा कक्ष उपलब्ध कराया गया है जिसमें कि पच्चीस बच्चे आराम से लिख-पढ़ सकते हैं। ये कमरे साफ-सुथरे हवादार हैं। सात स्थानों पर केन्द्र समुदाय के बीच ही कोई स्थान किराये पर लेकर चलाये जा रहे हैं। छः में से पाँच सेन्टर्स एजुकेटर्स के घर पर हैं। एक सेन्टर सड़क किनारे बने दुकाननुमा कमरे में चलाया जा रहा है। शेष एक सेन्टर का स्थान एक मंदिर प्रांगण को बनाया गया है। जहाँ खुले में पेड़ों के नीचे बैठकर बच्चे पढ़ते हैं। जिन सेन्टरों को एजुकेटर्स के घर पर या दुकाननुमा स्थान पर चलाया जा रहा है उनका प्रत्येक का किराया दो सौ रूपये प्रतिमाह संस्था द्वारा दिया जाता है। किराये के स्थानों पर चल रहे केन्द्रों में बच्चे भिंच-भिंच कर बैठ पा रहे थे। ऐसी स्थिति में शिक्षक द्वारा दौड़-भाग की कोई गतिविधि करवाना या छोटे समूहों में सामग्री के साथ काम कराया जाना बेहद मुश्किल या असंभव ही प्रतीत होता है। जो केन्द्र मंदिर प्रांगण में खुले स्थान पर चल रहा था। वह हमारे अवलोकन के समय बारिश की बूँदों के गिरने पर अस्त-व्यस्त हो गया था। बच्चों को पढ़ने लायक, छत सहित स्थान बिल्कुल भी पर्याप्त नहीं था। घरों में चलाये जा रहे सभी केन्द्रों की दीवारों और छत पर चार्ट शीट व कार्ड चिपकाये या लटकाये हुए थे। पेपर वर्क (फोल्डिंग) का एक चार्ट भी सभी सेन्टरों पर देखने को मिला।

बच्चे

बच्चों के बारे में एजुकेटर्स ने बताया कि ये सभी बच्चे ड्रॉप आऊट हैं जिन्होंने पिछले साल से लेकर तीन-चार साल पहले तक विद्यालय जाना बन्द कर दिया था। बच्चों से जब हमने पूछा तो वो इस बारे में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं बता पा रहे थे कि उन्होंने स्कूल जाना कब बन्द किया। दस-ग्यारह साल की एक ब्राइट सी लड़की ने तो कहा - ''सर मैंने तो सात-आठ साल पहले स्कूल जाना छोड़ दिया था।'' सभी केन्द्रों पर छः से चौदह आयु के बच्चों का नामांकन किया गया है। अधिकांश बच्चे छः से दस वर्ष आयु के थे। हांलाकि एजुकेटर्स एवं अन्य कार्यकर्ताओं का यह भी कहना था कि बच्चे यहाँ अपनी उम्र से छोटे ही नज़र आ सकते हैं। इसकी वज़ह शारीरिक बनावट या खानपान का सन्तुलित नहीं होना भी हो सकता है।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नामांकन एवं उपस्थिति

क्र. सं.	सेन्टर का नाम	नामांकन			उपस्थिति
		Boys	Girls	Total	Total
1.	टंगरा टोली	09	16	25	25
2.	कुंवरिया	13	11	24	24
3.	गौस नगर	07	18	25	22
4.	आज़ाद बस्ती, हुसैन नगर	14	11	25	20
5.	एस.सी. बस्ती	13	12	25	20
6.	बड़ा मंदिर, रेल्वे कॉलोनी	14	11	25	25
7.	म्यूनिसिपैलिटी एरिया	–	–	28	25
8.	हरिजन टोला	–	25	25	25
9.	नूरा मोहल्ला	04	21	25	25
10.	कानी बाजार	11	17	28	25
11.	हेठ टोला, हरिजन बस्ती, खोटी	07	18	25	25

उपलब्धि

अवलोकन के दिन सेन्टरों पर लगभग शत–प्रतिशत उपस्थिति थी। सेन्टरों के उपस्थिति रजिस्टर में देखने पर एवं बच्चों से बातचीत करने पर पाया की सेन्टरों पर औसतन 20 बच्चे नियमित उपस्थित रहते हैं।

सेन्टर पर उपस्थित बच्चों से भाषा व गणित विषय पर बातचीत की गयी। प्रत्येक सेन्टर पर चार–पाँच बड़ी उम्र (10 से अधिक) के बच्चे अटक–अटक कर किताब पढ़ सकते थे। शेष बच्चों में से पाँच–छ: बच्चे ऐसे थे जो बिना मात्रा के शब्द पढ़ रहे थे और शेष बच्चा को कुछ वर्णों की पहचान थी। सेन्टर पर आने वाले 9 से अधिक उम्र के अधिकांश बच्चे विद्यालय से ड्रॉप आऊट हैं। इनके साथ लिखने–पढ़ने के पर्याप्त अभ्यास की जरूरत है। इसी प्रकार गणित विषय में चारों संक्रियाओं, जोड़ना, घटाना, गुणा व भाग पर बच्चों से टेस्ट लिये गये। सभी एजुकेटर्स ने बताया कि उनके सेन्टर पर गणित विषय में भाग से आगे कार्य नहीं किया गया है। सभी सेन्टरों पर चारों संक्रियाएँ कर सकने वाले लड़के–लड़कियों की संख्या औसतन दो–तीन है। सेन्टरों पर अधिकांश बच्चे को 100 तक गिनती की पहचान है। एजुकेटर्स भी बार–बार गिनती लिखने का

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अभ्यास करवा रहे हैं। हासिल के जोड़ने व घटाने पर भी अधिकांश बच्चों को कठिनाई हो रही थी। गुलमा जिले के इस्राफिल के सेन्टर पर पढ़ने वाली बड़ी उम्र की सात लड़कियाँ गुणा व भाग की संक्रियायें भी ठीक तरह से कर रही थीं। यह सेन्टर बच्चों के शैक्षणिक उपलब्धि के लिहाज से मज़बूत नज़र आया।

बच्चों द्वारा अभ्यास कार्य

सेतु केन्द्र पर पढ़ने आ रहे बच्चों के लिखने-पढ़ने की स्थिति को जानने के लिए हमने उनकी कॉपियाँ (नोट बुक) देखी। अधिकांश सेन्टरों पर ज्यादातर बच्चों को एक ही नोट बुक दी गई है। नोट बुक के ऊपर बच्चों ने अपना नाम, मौहल्ले या स्थान का नाम लिखा हुआ है। अंदर के पन्नों में हिन्दी, गणित, अंग्रेजी तीनों विषयों का काम क्रम से किया हुआ था। बच्चों ने कहा एक ही कॉपी में सारा काम करते हैं! क्यों? अलग-अलग विषय की अलग-अलग नोटबुक क्यों नहीं हैं? इस पर हर एक शिक्षक ने बताया - ''एक ही कॉपी में आसानी से कर लेते हैं।'' ''कॉपियाँ खोने का डर नहीं रहता।'' ''बच्चे संभाल कर नहीं रख पाते अलग-अलग कॉपियाँ।'' ये कॉपियाँ केन्द्र पर ही रखी जाती हैं। बच्चे केन्द्र पर घर से खाली हाथ ही आते हैं और केन्द्र से घर भी खाली हाथ ही लौटते हैं।

लगभग हर केन्द्र पर बच्चों की कॉपियाँ देखने पर पाया गया कि एजुकेटर द्वारा कॉपी जाँचने की प्रक्रिया को एकरूपता नहीं दी गई है। शुरूआती दो-तीन पन्नों में आने वाला काम जाँचा गया है। अगले दस, बारह, पन्द्रह पेज बिना जाँच किये हुए हैं फिर अगले दो-तीन पेज फिर से जाँच लिए गये हैं। हमने एजुकेटर्स से इस पैटर्न के बारे में जब पूछा तो अधिकांश ने कहा - ''छूट गया।'' ''अब आगे से हम ध्यान रखेंगे।'' ''सॉरी।'' एक दो स्थानों पर हमने एजुकेटर को चैक किया हुआ कार्य दिखा कर भी बताया जो कि गंभीरता की कमी को दर्शा रहा था।

लगभग सभी केन्द्रों पर बालकों द्वारा किये गये लिखित कार्य के साथ समय (तारीख) का उल्लेख नहीं था। कुछ एजुकेटर्स ने कॉपियाँ जाँची तो हैं लेकिन वहाँ अपने हस्ताक्षर नहीं किये। क्यों? यह स्पष्ट नहीं हो सका। हाँ एक एजुकेटर ने कहा - ''सर मैं अभी खुद को हस्ताक्षर करने के लायक नहीं समझती वो तो मैं तब करूँगी जब में गजिटेड ऑफिसर बन जाऊँगी।'' उल्लेखनीय है कि यह बात उसने बहुती ही शालीनता और गंभीरता से कही थी।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एजुकेटर्स

सेतु केन्द्र पर पढ़ाने वाले शिक्षक को सिनी संस्था ने ''एजुकेटर्स'' नाम दिया है। ग्यारह में से दस सेतु केन्द्र महिलाएँ चला रही हैं। सिर्फ एक केन्द्र गुमला में इस्राफिल नाम का युवा चला रहा है। सभी शिक्षक बीस से पच्चीस वर्ष की उम्र के हैं। बच्चों के साथ काम किये जाने लायक एनर्जी इन सभी में हमें देखने को मिली। उत्साह नज़र आया। सभी एजुकेटर्स स्थानीय समुदाय से ही हैं।

योग्यता

सभी एजुकेटर्स इन्टर से बी.ए. पास तक हैं। इनमें से 7 शिक्षकों ने बताया कि वो आगे अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहते हैं। एजुकेटर्स ने बताया कि सेतु केन्द्र पर पढ़ाने के साथ ही वो अपनी पढ़ाई भी आसानी से जारी रख पा रहे हैं। ''जब परीक्षा होती है तब आप क्या करते हैं?'' इस सवाल के जवाब में लगभग सभी (5-7) शिक्षकों ने कहा - ''उन दिनों में हमारे घर का ही कोई जना बच्चों को पढ़ा देता है।''

क्र.सं.	नाम	योग्यता
1.	नीलम लकड़ा	इन्टर पास
2.	स्मिता बाड़ा	बी.ए.
3.	इस्राफिल	एम.ए. प्रीवियस
4.	रानी परवीन	बी.ए. प्रथम वर्ष
5.	उमा देवी	बी.ए.
6.	लक्ष्मी तांती	इन्टर प्रथम वर्ष
7.	ज्योती	बी.कॉम. द्वितीय वर्ष
8.	जेबा	बी.ए.
9.	मनीषा	बी.ए.
10.	सुषमा	बी.ए.
11.	श्वेता देवी	बी.ए.

शैक्षणिक योग्यता के लिहाज से एजुकेटर्स पर्याप्त योग्य हैं। परन्तु इनके साथ अभी गणित की विषयवस्तु पर कार्य की जरूरत है। फिल्ड विज़िट के दौरान 7 एजुकेटर्स से

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

समूह चर्चा की गयी थी। इसके साथ कक्षा पाँच तक के स्तर में 6 सवालों पर कार्य किया। इसमें देखा गया कि एक भी एजुकेटर सभी 6 सवाल सही हल नहीं कर पाये।

शिक्षण विधा

ग्यारह सेन्टर्स के अवलोकन के दौरान शिक्षण की प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास किया गया। इसी के साथ शिक्षण विधा पर एजुकेटर्स की स्पष्टता को समझा गया। विज़िट के दौरान किये गये अवलोकनों को मुख्यत: चार स्तरों में समझने के प्रयास रहे – समूह निर्माण, समूह शिक्षण, भाषा शिक्षण एवं गणित शिक्षण।

1. **समूह निर्माण** :
   सभी सेन्टरों पर एक चार्ट टंगा हुआ था जिसमें सेन्टर पर पढ़ने वाले लड़के–लड़कियों के नाम व उनके समूहों को दर्शाया गया था। समूहों को माह वार दर्शाया गया था। मुख्यत: सभी लड़के–लड़कियों को तीन समूह में बाँटा गया था। ये समूह लाल, पीले व हरे रंग में दर्शाये गये थे। 11 सेन्टर्स में से सिर्फ एक सेन्टर के एजुकेटर ने बताया कि इन समूहों में विभाजन का तरीका क्या है।

   > एजुकेटर ने बताया कि हम टेस्ट लेते हैं जिसमें तीनों विषयों हिन्दी, अंग्रेजी व गणित के नम्बर जोड़ते हैं। फिर सेन्टर पर सबसे कम व सबसे अधिक प्राप्त होने वाले नम्बरों के योग में तीन का भाग देते हैं। इस तरह से आए भागफल से कम अंक प्राप्त करने वाले को लाल समूह, भाग फल के तीन गुने से अधिक आने वाले को हरा समूह व शेष का पीला समूह बनता है। इन्हें प्रशिक्षण में समूह निर्माण का यही तरीका बताया गया है।

   शेष एजुकेटर्स ने बताया कि जो सबसे कमजोर होते हैं वे लाल समूह और जो सबसे अधिक जानते हैं वे हरे समूह और दोनों समूह के बीच वाले पीले समूह में होते हैं।

   एजुकेटर्स से जब यह जानने का प्रयास किया गया कि यह समूह निर्माण हमें पढ़ाने के तरीकों में क्या मदद करता है या कि इससे किस तरह की दिशाएँ मिलती हैं, तो ठीक तरह से किसी को भी स्पष्टता नहीं थी। यही बातचीत जब अवलोकन के दौरान उपस्थिति संस्था के कार्यकर्ताओं के साथ की गयी तो उनको भी स्पष्टता नहीं थी। दरअसल समूह निर्माण की यह प्रक्रिया शिक्षण में

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मददगार नहीं है। इससे स्पष्ट नहीं होता कि लाल समूह के साथ भाषा में क्या काम व गणित में काम करने की जरूरत है यद्यपि एजुकेटर प्रतिमाह बच्चों को समूह वार विभाजित कर रहे हैं।

2. **समूह शिक्षण**

संस्था के साथ बातचीत एवं रिपोर्ट में समूह शिक्षण, मल्टी लेवल शिक्षण का उल्लेख किया गया है। सेन्टर पर आने वाले बच्चे उम्र व सीखने के अलग-अलग स्तरों पर हैं अत: यहाँ अनिवार्यत: मल्टीलेवल शिक्षण विधा प्रभावी व कारगर रहेगी। अवलोकन में देखा गया कि समूह निर्माण में रही खामी के कारण मल्टीलेवल शिक्षण कराना मुश्किल होता गया। मल्टीलेवल शिक्षण के लिए अनिवार्य है कि पर्याप्त शिक्षण सामग्री हो, स्थान हो एवं प्रत्येक बच्चे के सीखने के स्तर की स्पष्टता हो। जो सेन्टर विद्यालय परिसर में चल रहे थे वहाँ पर्याप्त स्थान था। परन्तु वहाँ पर भी मल्टीलेवल शिक्षण से कार्य नहीं हो रहा था। सेन्टर पर पर्याप्त शिक्षण सामग्री का अभाव है। यद्यपि चार सेन्टरों पर बच्चों को अलग-अलग समूहों में बिठाया गया था परन्तु वहाँ बच्चे सिर्फ समूह में बैठे थे, क्या करना है, कैसे करना है इसका उन्हें पता नहीं था। एक सेन्टर एस.सी. बस्ती चक्रधरपुर में एक एजुकेटर ने एक समूह में पढ़ने की सारी सामग्री एक-एक लड़की के हाथ में दे दी जबकि वह सामग्री अलग-अलग दक्षताओं के लिए थी। इसकी स्पष्टता एजुकेटर को भी नहीं थी।

3. **भाषा शिक्षण**

अवलोकन के दौरान भाषा शिक्षण पर किये जा रहे कार्य को देखा गया एवं बच्चों की कॉपियाँ देखकर पूर्व में किये गये कार्य का अनुमान लगाया गया। भाषा शिक्षण के लिए सभी सेन्टरों पर कार्ड हैं। ये कार्ड एजुकेटर्स ने प्रशिक्षण के दौरान स्वयं ने ही बनाये हैं। इसी तरह प्रत्येक सेन्टर पर भाषा शिक्षण के लिए दो-तीन शब्द चकरी रखी गयी हैं। एजुकेटर बातचीत में कहते हैं कि वे शब्द पद्धति से पढ़ाते हैं। इसी तरह संस्था के वरिष्ठ कार्यकर्ता भी मानते हैं कि शब्द पद्धति से बच्चे जल्दी सीखते हैं। परन्तु सेन्टर पर देखा गया कि शब्द पद्धति से शिक्षण का अभ्यास एजुकेटर्स का नहीं बना है। इनके पास शब्द पद्धति से शिक्षण कराने के लिए क्रमवार व्यवस्थित शिक्षण सामग्री नहीं है, जैसे शब्द के साथ चित्र के कार्ड, शब्द से वाक्य शिक्षण की सामग्री व छोटी-छोटी सार्थक वाक्यों की कहानियाँ या गद्यांश इत्यादि।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भाषा शिक्षण में यहाँ जो कार्ड देखे उनमें लगातार सीखने के बाद मात्रा शिक्षण पर कार्य किये जाने का उल्लेख है। यदि वर्ण और मात्रा शिक्षण साथ–साथ चलता रहे तो सार्थक वाक्यों के निर्माण सहजता से हो सकते हैं।

सेन्टर्स में बच्चों की कॉपियों में बारहखड़ी लिखी गयी है। शब्द निर्माण की प्रक्रिया को ट + म + ट + म = टमटम की तरह भी सिखाया गया है। इस अनुभव पर संस्था के कार्यकर्ता कहते हैं कि एजुकेटर्स अपने सीखने के अनुभवों से दूर नहीं हो पाये हैं। उन्हें बार–बार समझाने के बावजूद भी वो बारहखड़ी का ही प्रयोग करते हैं।

4. **गणित शिक्षण** :

अवलोकन के दौरान सेन्टर पर गणित शिक्षण के लिए कोई सामग्री नहीं देखी गयी। एजुकेटर के पास एक पाठ्यक्रमनुमा सामग्री उपलब्ध थी। एजुकेटर से बातचीत करने पर पता चला कि 100 तक संख्या सिखाने के बाद जोड़ना, घटाना, गुणा व भाग सिखाया जाता है। 11 में से दो एजुकेटर्स ने बताया कि वे तीलियों से गिनती सिखाते हैं परन्तु सेन्टर पर तीलियाँ नहीं थीं। सेन्टर पर बच्चों की कॉपियाँ देखने पर महसूस हुआ कि बच्चों को करवाये जा रहे अभ्यास के प्रति एजुकेटर गंभीर नहीं हैं। पहला तो यह कि अभ्यास कार्य नियमित नहीं दिया जाता एवं जाँचा भी नहीं जाता। मात्र तीन एजुकेटर्स ने अभ्यास कार्य जाँच रखा था परन्तु इस अभ्यास कार्य को सही व गलत कर रखा था। इसके आधार पर नया अभ्यास कार्य नहीं दिया गया था।

शिक्षण सामग्री

अवलोकन के दौरान सेन्टर पर शिक्षण सामग्री की उपलब्धता व उपयोग करने के तरीकों को समझने का प्रयास रहा। सेन्टर पर शिक्षण सामग्री के रूप में शब्दों के कार्ड, शब्द शिक्षण की चकरी व विभिन्न तरह के चार्ट सभी सेन्टरों पर उपलब्ध थे। इन चार्टों में बारहखड़ी, 1 से 100 तक संख्या, शब्द चित्र व शरीर के अंगों के चार्ट हैं। चार सेन्टर्स पर एजुकेटर द्धारा बनाये गये चार्ट भी देखे गये। इन चार्ट में गिनती चित्र व चार्ट मुख्य रूप से थे। एक सेन्टर पर एजुकेटर द्धारा बच्चों के साथ किये गये क्रॉफ्ट का कार्य भी उपलब्ध था। सेन्टर पर पढ़ने वाले बच्चों की उम्र व सीखने के स्तर को देखते हुए यह सामग्री पर्याप्त नहीं लगी। सेन्टर पर उपलब्ध कार्ड एजुकेटर्स द्धारा प्रशिक्षण में बनाये गये थे। इन कार्डों पर लिखे गये वर्णों को भी उस तरह नहीं लिखा गया जिस तरह

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

(मानक आधार पर) लिखे जाने चाहिए। इसी तरह गणित शिक्षण के लिए दीवारों पर लगे चार्टों के अतिरिक्त कोई सामग्री उपलब्ध नहीं थी।

सेन्टर पर उपलब्ध शिक्षण सामग्री का उपयोग भी एजुकेटर द्धारा नहीं किया जा रहा है, जैसे सभी स्थानों पर शब्द कार्ड हैं परन्तु बच्चों की कॉपियों में शब्द कार्ड के अभ्यास नहीं देखे गये।

पाठ्यक्रम

संस्था ने सेन्टर पर किये जाने वाले ब्रिज कोर्स के लिए पाठ्यक्रम का चयन किया है। संस्था द्धारा बताया गया कि पाठ्यक्रम में हिन्दी, गणित, पर्यावरण अध्ययन व अंग्रेजी विषय सम्मिलित है। इसके लिए संस्था ने 2006-07 में ''प्रयास'' द्धारा झारखण्ड के लिए बनाये गये ब्रिज कोर्स को लिया है। इस ब्रिज कोर्स में हिन्दी व गणित की विषयवस्तु व्यवस्थित तौर पर सम्मिलित है।

अवलोकन के दौरान सेन्टर पर भाषा व गणित का पाठ्यक्रम प्रत्येक सेन्टर पर उपलब्ध था। सेन्टर पर दिये गये पाठ्यक्रम में ''प्रयास'' द्धारा उपलब्ध ब्रिज कोर्स में से चुनाव करके इकाईयाँ ली गयी थीं और उनकी फोटोकॉपी दी हुई थी। सेन्टर पर उपलब्ध पाठ्यक्रम में क्रमबद्धता का ध्यान नहीं रखा गया। लगा कि बहुत जल्दी में कुछ सामग्री बनायी गयी है। जैसे 100 तक संख्या के बाद गुणा व भाग के शिक्षण पर कार्य किया हुआ है। इनके बीच में जोड़ना व घटाने का जिक्र नहीं है। इसके बारे में संस्था के कार्यकर्ताओं ने कहा कि पाठ्यक्रम बहुत मोटा हो रहा था अत: ऐसा किया गया है।

संस्था द्धारा सेन्टर पर उपलब्ध कराये गये पाठ्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन व अंग्रेजी की विषय वस्तु नहीं थी। सेन्टर पर उपलब्ध पाठ्यक्रम भी ऐसा नहीं था कि जिसको पढ़कर एजुकेटर शिक्षण कार्य करवा सके, जैसे एक से अधिक गतिविधियों का ब्यौरा नहीं था, शिक्षण सामग्री, अभ्यास कार्य मूल्यांकन कार्य का अलग से उल्लेख नहीं था। इन सेन्टर्स की सबसे अधिक चुनौती है कि अलग-अलग स्तर व उम्र के बच्चे हैं। इन्हें कैसे शिक्षण कराया जाये, सेन्टर पर उपलब्ध पाठ्यक्रम इसमें मदद नहीं करता।

प्रशिक्षण

संस्था द्धारा एजुकेटर के कुल 13 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किये गये हैं। यह प्रशिक्षण दो चरणों में आयोजित किये गये - पहले चरण के तहत 5 दिवसीय प्रशिक्षण मई 2010 में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में खास तौर पर भाषा, गणित व

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पर्यावरण अध्ययन पर कार्य किया गया। एजूकेटर्स ने इस प्रशिक्षण के बारे में बताया कि यह एक प्रभावी प्रशिक्षण था। इसमें सेन्टर के लिए गतिविधियों का अभ्यास एवं विषयवस्तु की समझ बनाने पर कार्य किया गया। इस प्रशिक्षण का एजुकेटर उत्साह के साथ जिक्र करते हैं। दूसरे चरण में जनवरी माह में 8 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस आठ दिवसीय प्रशिक्षण में पहले चरण में बतायी गयी विषयवस्तु से आगे की विषयवस्तु पर कार्य किया गया। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी की विषयवस्तु भी शामिल की गयी। इस प्रशिक्षण के बाद में ही सेन्टर पर अंग्रेजी शिक्षण की शुरूआत हुई है।

दूसरे चरण की विषयवस्तु का चयन पहले चरण की क्रमबद्धता में लिया गया। जबकि सेन्टर पर पढ़ने वाले बच्चों के साथ अभी प्रारम्भिक कार्य की ही जरूरत है। अत: इसी चरण में बतायी गयी विषयवस्तु में अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य विषयवस्तु का उपयोग नहीं हो रहा है। अवलोकन के दौरान देखा गया कि एजुकेटर द्वारा उन्हीं शिक्षण विधाओं का इस्तेमाल हो रहा है जिनसे उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा ली है अत: प्रशिक्षण की विषयवस्तु, गतिविधियों के अभ्यास व प्रशिक्षण में प्रयुक्त शिक्षण सामग्री पर पुर्नविचार की जरूरत होगी।

मासिक बैठकें

संस्था द्वारा तीनों जिलों में अलग-अलग मासिक बैठकें आयोजित की जाती हैं। इन मासिक बैठकों का अधिकतम समय 2 से 3 घण्टे का रहता है। ये मासिक बैठकें क्यों आयोजित की जाती हैं और इसमें किस-किस तरह काम की सम्भावनाएँ हैं, इस पर संस्था के कार्यकर्ताओं को स्पष्टता नहीं थी।

मॉनिटरिंग सिस्टम

संस्था द्वारा तीन जिलों में 70 ब्रिज कोर्स संचालित किये जा रहे हैं। ब्रिज कोर्स संचालित करने के लिए प्रत्येक सेन्टर पर एक एजुकेटर को जिम्मेदारी दी गयी है। संस्था द्वारा एजुकेटर को लगातार सपोर्ट व मॉनिटरिंग के लिए चार सुपरवाईजर नियुक्त हैं। इनमें से दो सुपरवाईजर हजारीबाग जिले में (38 सेन्टर) व एक-एक सुपरवाईजर चक्रधरपुर (14 सेन्टर) व गुमला (18 सेन्टर) में नियुक्त हैं। चक्रधरपुर में 'CSWR[1]' संस्था कार्य कर रही है एवं शेष दोनों जिलों में ''सिनी'' सीधे कार्य कर रही है। गुमला

---

[1] *The Centre of Social Welfare and Rehabilitation.*

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जिले में संस्था ने सुपरवाईजर के अतिरिक्त Pedagogy Specialist को भी नियुक्त किया हुआ है।

सुपरवाईजर प्रत्येक सप्ताह दो-तीन बार प्रत्येक सेन्टर की विज़िट करते हैं। इस विज़िट में शिक्षण में सहयोग के अतिरिक्त सूचनाओं का आदान-प्रदान भी शामिल रहता है।

एजुकेटर्स ने बातचीत में संस्था के अन्य कार्यकर्ताओं द्वारा सेन्टर विज़िट करने का भी उल्लेख किया है।

संस्था द्वारा सेन्टर की मॉनिटरिंग के लिए एक फॉर्मेट बनाया गया है। यह फॉर्मेट सुपरवाईजर द्वारा प्रत्येक सेन्टर के लिए भरा जाता है। 7 पेज के फॉर्मेट में सेन्टर के बारे में विस्तृत सूचनाएँ ली जाती हैं। ये सूचनाऐं हो सकता है कि संस्था के लिए बहुत जरूरी हों परन्तु संस्था के जिला एवं राज्य स्तर के कार्यकर्ताओं के पास इनका विश्लेषण नहीं था कि, किस तरह के पैटर्न उभर रहे हैं, अब हमें आगे क्या करना है। चूंकि यह एक फॉर्मेट है जिसमें सम्भावित उत्तरों में ही चुनाव करना होता है अत: इन फॉर्मेट में सेन्टर की विशिष्टता की पहचान नहीं होती । जिस प्रकार प्रत्येक बच्चे के लिए अलग शिक्षण योजना की जरूरत होती है उसी तरह प्रत्येक सेन्टर की अपनी विशिष्टता होती है और आगामी योजना उसी के अनुसार होनी चाहिए।

समुदाय

घरों में चलाये जा रहे सभी स्थानों पर समुदाय के लोगों का जुड़ाव नज़र आया। जिन स्कूलों में केन्द्र चल रहे हैं। वहाँ समुदाय सदस्य कम ही आ पाते हैं। विज़िट के दौरान लगभग सभी केन्द्रों पर हमें वो अभिभावक वहाँ मिले जिन्होंने अपने बच्चों का नामांकन इन केन्द्रों पर करवाया हुआ है। सभी केन्द्रों पर ''(PTA) Parents Teachers Association'' बनी हुई है। इनके सदस्य बच्चों के माता-पिता और स्थानीय पार्षद सहित अन्य लोग भी हैं। PTA बैठक हर महिने की जाती है। बैठकें केन्द्र के स्थान पर एवं जहाँ सरकारी विद्यालय में केन्द्र चल रहे हैं, वहाँ एजुकेटर्स के घर पर या अन्य कोई उपयुक्त स्थान पर ये बैठकें की जा रही हैं। इनमें सदस्य संख्या न्यूनतम छ: से लेकर चौदह तक दर्ज की गई है। बैठक का एक रजिस्टर बनाया गया है। उसमें कार्यवाही लेखन एवं उपस्थित सदस्यों के हस्ताक्षर समुचित तरीके से किये गये हैं। कार्यवाही लेखन में सभी स्थानों पर एकरूपता देखने को मिली है। जैसे - ''बैठक में उपस्थित सदस्यों से बच्चों को समय पर केन्द्र पर भेजने को कहा गया'' इत्यादि।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

निष्कर्ष

प्रस्तुत रिपोर्ट के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए संस्था द्धारा किये गये कार्य की मुख्यत: निम्न निष्कर्ष रहे हैं। इनका विवरण निम्न प्रकार से है –

कार्यक्रम के मज़बूत पक्ष

संस्था द्धारा किये गये कार्य में निम्न मजबूत पक्ष उभरा है –

स्कूली व्यवस्था से जुड़ाव

- सिनी संस्था द्धारा इस प्रोजेक्ट के तहत 70 सेन्टर संचालित किये जा रहे हैं। संस्था ने सत्र 2011-12 में सेन्टरों के विद्यार्थियों का स्कूलों में नामांकन करने की तैयारी प्रारम्भ कर दी है। इस तैयारी के तहत संस्था द्धारा प्रयोगात्मक रूप में कुछ सेन्टर विद्यालय में संचालित किये जा रहे हैं। प्रोजेक्ट के दूसरे वर्ष सभी सेन्टर विद्यालय में संचालित होगें।
- प्रोजेक्ट के दूसरे वर्ष में विद्यालय में संचालित होने वाले सेन्टरों पर उपचारात्मक शिक्षण कार्य किया जायेगा। उपचारात्मक शिक्षण कार्य के लिए संस्था द्धारा सामग्री का निर्माण कर लिया गया है।
- संस्था प्रोजेक्ट के पहले वर्ष से ही शिक्षा विभाग के साथ समन्वयन बनाकर चल रही है। संस्था का विभाग के अधिकारियों एवं विद्यालय के प्रधानाचार्यों के साथ सहयोगपूर्ण रिश्ता है।

समुदाय से जुड़ाव

- संस्था का समुदाय के लोगों के साथ मज़बूत रिश्ता है। लोगों में संस्था की एक सकारात्मक पहचान है। संस्था ने अपने साथ अभिभावकों, महिला समूहों एवं जनप्रतिनिधियों को लिया है। अभिभावक बच्चों को नियमित विद्यालय भेजने एवं ठहराव के लिए उत्साहित हैं।
- संस्था द्धारा संचालित सेन्टरों पर नामांकित 25 बच्चों में से औसतन 20 बच्चे प्रतिदिन उपस्थित रहते हैं। इन बच्चों के साथ एजुकेटर्स का भावनात्मक रिश्ता है जो बच्चों के साथ काम करने के लिए जरूरी है।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्रोजेक्ट की रणनीति

- **सेन्टर के स्थान का चयन** :
  अवलोकन किये गये सेन्टर समाज के कमजोर तबके एवं शिक्षा से वंचित समुदाय के बीच चल रहे थे। इनके संचालन के लिए ऐसे स्थानों का चयन किया गया जहाँ सभी बच्चे सहजता से पहुँच सकते हैं।

- **एजुकेटर का चयन** :
  एजुकेटर का चयन सेन्टर के इर्द-गिर्द के समुदाय में से ही किया है। एजुकेटर बहुत उत्साहित एवं ऊर्जावान है।

वे पक्ष जहाँ अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है –

पाठ्यक्रम :

संस्था ने सेन्टर्स पर पाठ्यक्रम के लिए झारखण्ड में 'प्रयास' संस्था द्धारा बनाये ब्रिज कोर्स को अपनाया है। इस ब्रिज कोर्स से भाषा व गणित के कुछ भाग की फोटोकॉपी करके सेन्टर पर उपलब्ध करायी गयी है। सेन्टर पर उपलब्ध इस सामग्री में क्रमबद्धता नहीं है। एजुकेटर्स के पास उपलब्ध इस पाठ्यक्रम से एजुकेटर्स को बच्चों के साथ काम करने के तरीकों की स्पष्टता नहीं होती।

प्रशिक्षण :

संस्था द्धारा दो चरणों में प्रशिक्षण आयोजित किये गये हैं। जो क्रमश: पाँच दिन व आठ दिन के थे। इस तरह संस्था द्धारा एजुकेटर्स के कुल 13 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किये गये हैं। एजुकेटर्स की वर्तमान शैक्षणिक योग्यता एवं शिक्षण अनुभव को देखते हुए प्रशिक्षण दिवसों की संख्या कम है एवं इसमें निरन्तरता का अभाव है।

शिक्षण विधा :

संस्था के द्धारा संचालित सेन्टर्स पर विभिन्न आयु वर्ग के लड़के-लड़कियाँ पढ़ते हैं अत: एजुकेटर के लिए यह बहुत चुनौतीपूर्ण है कि प्रत्येक विद्यार्थी अपने स्तर व गति से सीखे। इसके लिए मल्टीलेवल व समूह शिक्षण की विधाऐं कारगर होती हैं। इन विधाओं पर एजुकेटर सहित संस्था के सभी कार्यकर्ताओं की एक समझ होना अनिवार्य है। इन विधाओं के लिए सेन्टर्स

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पर पर्याप्त शिक्षण सामग्री होनी चाहिए। सेन्टर पर आने वाले प्रत्येक विद्यार्थी के पास पर्याप्त शिक्षण सामग्री को सुनिश्चित करना जरूरी है।

डॉक्यूमेन्टेशन :

संस्था द्वारा की जाने वाली गतिविधियों का दस्तावेजीकरण होना महत्वपूर्ण हो सकता है। वर्तमान में जिला स्तर पर होने वाली बैठकों का विस्तृत दस्तावेजीकरण नहीं है। इसी प्रकार संस्था द्वारा जो दो प्रशिक्षण आयोजित किये गये हैं उसमें से पहले प्रशिक्षण की रिपोर्ट उपलब्ध नहीं थी। दूसरे प्रशिक्षण की रिपोर्ट से भी पता नहीं चल रहा था कि क्या किया एवं क्या हुआ। इस पक्ष को मज़बूत करना जरूरी है।

मॉनिटरिंग सिस्टम :

संस्था द्वारा सेन्टरों की दो तरह से मॉनिटरिंग की जाती है। पहला तो यह कि संस्था के सुपरवाईजर सप्ताह में दो-तीन बार सेन्टरों की विज़िट करते हैं। दूसरा यह कि प्रतिमाह सेन्टरवार सुपरवाइजर द्वारा फॉर्मेट भरा जाता है। यह एक सात पेज का फॉरमेट है जिसमें मुख्यत: संख्यात्मक जानकारियाँ ली जाती हैं।

इन सूचनाओं से किस तरह के पैटर्न उभर रहे हैं। इसका विश्लेषण सुपरवाइजर व संस्था के अन्य कार्यकर्ताओं को भी स्पष्ट नहीं है।

मासिक बैठकें :

संस्था में जिलेवार सभी एजुकेटर्स की मासिक बैठक आयोजित की जाती है। संस्था के सुपरवाइजरों ने बताया कि ये बैठक 2 से 3 घण्टे चलती है। बैठक क्यों आयोजित की जाती है एवं बैठक के एजेण्डे क्या होते हैं, इसकी इन्हें स्पष्टता नहीं है।

पहले वर्ष का शेष कार्य

संस्था के कार्यकर्ताओं ने बताया कि निम्न कार्य प्रोजेक्ट के पहले वर्ष में नहीं किये जा सके हैं। इन्हें आगामी महिनों में किया जायेगा –

आंगनबाड़ी के लिए सामग्री तैयार करना।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

समेकित सुझाव

पाठ्यक्रम :

संस्था द्धारा चलाये जा रहे सेन्टरों में 6 से 14 आयु वर्ग के लड़के-लड़कियाँ आते हैं। लड़के-लड़कियों के अनुभव एवं सीखने के स्तर में वैविध्य है। अत: इनके वैविध्य को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम निर्माण किया जाना चाहिए।

शिक्षण सामग्री :

सेन्टर पर पढ़ने वाले बच्चों के पास पर्याप्त शैक्षिक सामग्री होनी चाहिए जिससे समझकर वे अभ्यास कर सकें। सेन्टरों पर अधिकांश बच्चे लिखने-पढ़ने, सीखने के स्तर पर हैं अत: इनके लिए कहानियों की रोचक पुस्तकें होनी चाहिए।

मासिक बैठक :

मासिक बैठक को मज़बूत करने की आवश्यकता है। इस बैठक को प्रशिक्षणों की निरन्तरता के रूप में देखा जाना चाहिए। मासिक बैठक दो दिनों के लिए आयोजित की जायें। इन बैठकों में पिछले महीने किये गये कार्य की समीक्षा व अगले माह किये जाने वाले कार्य का नियोजन हो। साथ ही जिन मुद्दों पर एजुकेटर्स को स्पष्टता नहीं है, उन पर इन बैठकों में कार्य किया जाये। यह बैठक शैक्षणिक मज़बूती देने में कारगर हो सकती है।

मॉनिटरिंग सिस्टम :

संस्था द्धारा तैयार मॉनिटरिंग फॉरमेट के अतिरिक्त सेन्टर वार गुणात्मक रिपोर्ट ली जानी आवश्यक है। इससे सेन्टर की विशिष्टता के साथ-साथ आगे किये जाने वाले कार्यों की दिशा भी मिलेगी।

रिपोर्टिंग :

संस्था में की जाने वाली प्रत्येक गतिविधि की गुणात्मक रिपोर्ट बनाया जाना आवश्यक है। सुपरवाइजर के अतिरिक्त सेन्टर विज़िट करने वाले सभी कार्यकर्ताओं की फील्ड रिपोर्ट होने से प्रोजेक्ट को गति मिलेगी।

प्रोजेक्ट प्रबन्धन :

फील्ड विज़िट के दौरान किये गये अवलोकन व बातचीत के आधार पर

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महसूस हुआ कि प्रोजेक्ट प्रबन्धन में निम्न सुझावों को सम्मिलित करने से मज़बूती मिलेगी –

- प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर पूरे कार्यक्रम के लिए जवाबदेह हो।
- राज्य स्तर के प्रोजेक्ट कार्यकर्ताओं द्वारा सेन्टरों की निश्चित अन्तराल पर विज़िट करना जरूरी हो।
- जिला स्तर पर आयोजित होने वाली मासिक बैठकों में राज्य स्तर से कम से कम एक प्रोजेक्ट कार्यकर्ता अवश्य उपस्थित रहे।
- एजुकेटर्स के लिए आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों में समय-समय पर प्रोजेक्ट के सभी कार्यकर्ता भाग लें जिससे की पाठ्यक्रम, शिक्षण विधा, शिक्षण सामग्री एवं प्रोजेक्ट विज़न की साझा समझ बने।

सिनी संस्था के राँची कार्यालय में दिनांक 8 अप्रैल 2011 को शेयरिंग बैठक आयोजित की गयी। इस बैठक में संस्था के सभी प्रोजेक्ट कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। बैठक में फील्ड अवलोकन से प्राप्त उपरोक्त निष्कर्षों एवं सुझावों पर विस्तृत बातचीत हुई और सहमति बनी।

प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर सुश्री पारोमिता मजूमदार के अवकाश पर होने के कारण इस विज़िट के दौरान उनसे बातचीत नहीं हो सकी।

– & —

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परिशिष्ट–1

Glimpses of the field visit

Discussion with students

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

Group Discussions

Group Discussion with Government School Teachers

Group Discussion with Community Members

Group Discussion with Educators

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

Group Chart in centers

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अभिभावकों एवं PTA सदस्यों की सूची

अभिभावक एवं PTA सदस्य जिनसे हमने बातचीत की –

1. सरजू राम, हरिजन टोला खोरी, हजारीबाग
2. सावित्री देवी, हरिजन टोला खोरी, हजारीबाग
3. पुतुल देवी, हरिजन टोला खोरी, हजारीबाग
4. सरिता देवी, हरिजन टोला खोरी, हजारीबाग
5. मीरा देवी, हरिजन टोला खोरी, हजारीबाग
6. जानकी देवी, रेल्वे कॉलोनी, चक्रधरपुर
7. प्रमिला, रेल्वे कॉलोनी, चक्रधरपुर
8. सावित्री देवी, रेल्वे कॉलोनी, चक्रधरपुर
9. सुनील, रेल्वे कॉलोनी, चक्रधरपुर
10. रामेश्वर, रेल्वे कॉलोनी, चक्रधरपुर
11. माना सिंह, रेल्वे कॉलोनी, चक्रधरपुर
12. रेखा, रेल्वे कॉलोनी, चक्रधरपुर
13. बेबी, रेल्वे कॉलोनी, चक्रधरपुर
14. बसंती, रेल्वे कॉलोनी, चक्रधरपुर
15. ज्योति, रेल्वे कॉलोनी, चक्रधरपुर
16. राजेश्वरी, रेल्वे कॉलोनी, चक्रधरपुर
17. शकुन्तला, रेल्वे कॉलोनी, चक्रधरपुर
18. रितु देवी, पुराना मौहल्ला, गुमला
19. अनिता, पुराना मौहल्ला, गुमला
20. उमा, पुराना मौहल्ला, गुमला
21. रीना, पुराना मौहल्ला, गुमला
22. अमर मडरिया, पुराना मौहल्ला, गुमला
23. गायत्री देवी, पार्षद, पुराना मौहल्ला, गुमला
24. मीना देवी, पुराना मौहल्ला, गुमला
25. कंचन देवी, पुराना मौहल्ला, गुमला
26. विजय गोप, पुराना मौहल्ला, गुमला

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सरकारी विद्यालय के अध्यापक एवं अधिकारियों की सूची

1. अनिल कुमार ठाकुर, प्रधानाध्यापक, चक्रधरपुर
2. भारती उराव, सहायक शिक्षक, SPG Mission
3. कनीज़ फातिमा, प्रधानाध्यापक, उर्दू प्राथमिक स्कूल बंग्लाता
4. शिवनाथ महतो, सचिव, विद्यालय UPS
5. इलियास हुसैन, अध्यापक
6. संदीप सांघी, सुपरवाईजर, चक्रधरपुर

अध्यापक (एजुकेटर्स) जिनके साथ फोकस ग्रुप डिस्कसन किया गया –

सभी अध्यापक हजारीबाग से ही थे।

1. हैदर अली, बी.ए. (उर्दू), जनवरी 2011 से
2. प्रीतम सोनी, बी.ए., जनवरी 2011 से
3. रनवीर, बी.ए., जनवरी 2011 से
4. नीता कुमार, बी.ए., जून 2010
5. रितु, इन्टर, जून 2010
6. आफरिन नेहा, बी.ए. (तृतीय वर्ष), जून 2010
7. अर्शी, बी.एस.सी., जून 2010
8. बबन भारती, सुपरवाइजर, सिनी झारखण्ड
9. बादल, सुपरवाइजर, सिनी, झारखण्ड
10. गुरप्रीत सिंह, प्रोग्राम कॉर्डिनेटर, सिनी, झारखण्ड

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com